

भोजपुरी लोक संस्कृति के सन्दर्भ में लोक सृजन का अध्ययन

डॉ. वर्षा रानी

The ICFAI University Raipur, Kumhari, Chhattisgarh, India

Email: varsharani@iuraipur.edu.in

Abstract

लोक सृजन शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें पहला शब्द है लोक जिसका अर्थ है असभ्य, अशिक्षित। दूसरा शब्द है सृजन जिसका अर्थ है मानसिक प्रक्रिया जिसमें अनेक नये-नये विचार उत्पन्न होते हैं। लोक सृजन में मौलिकता होती है। भोजपुर के लोग अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक परम्पराओं के अवसर पर अनेक प्रकार के गीतों का गायन करते हैं ये गीत लौकिक होते हैं लोक निर्मित गीतों का गायन अनेक सामाजिक परम्पराओं के अवसर पर किया जाता है। लोक सृजन के अंतर्गत अनेक प्रकार की कलाएं देखने को मिलती हैं जिसमें ग्रामीण जन की सृजनात्मकता दिखती है। ग्रामीण लोगों के पास भले ही कोई स्कूली ज्ञान नहीं होता उनके पास कोई डिग्री नहीं होती है लेकिन उनके अंतः मन से निकले भाव गीतों के रूप में पिरों दिये जाते हैं। लोक स्वयं को गढ़ता है जो समय-समय पर स्वयं को परिवर्तित और परिवर्द्धित करता है और समाज के प्रत्येक वर्ग को अपने में समेटता और सहेजता है। इसी संदर्भ से लोक संसार का विस्तारण होता है। लोक काव्य अपने आप में वृहद है जो मानव मन की प्रकृति के आधार पर उपजता है इसमें लोक भावना से जिन विचारों की सहज उत्पत्ति और मन की स्वीकृति होती है वह आगे चलकर लोक गीतों के रूप में हमारे समक्ष आती हैं। लोक सृजन में संस्कार गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक कला, लोकनाट्य, लोक काव्य आदि का अध्ययन किया जाता है।

Keywords (कुंजी शब्द) – लोकसृजन, मौलिकता, संस्कृति, परम्पराएँ, सृजनात्मकता, लोक कथा, लोक गाथा, लोक कला, संस्कार गीत, लोक जीवन, लोकनाट्य, लोक काव्य।

1. प्रस्तावना

लोक काव्य का अर्थ है लोगों का काव्य अर्थात् ग्रामीण जनता के सरल मन से निकले भावों को गेय पदों में निर्मित पंक्तियाँ। ग्रामीण लोग बड़ी पोथी नहीं पढ़े रहते लेकिन उनके मन की संवेदना काव्य के माध्यम से प्रस्फुटित होती है। लोक काव्य के अंतर्गत लोक गीतों को सम्मिलित किया गया है। लोगों की मनः संवेदना गीत बन जाती है ये गीत दीर्घ काल से चले आ रहे हैं जो सामाजिक परम्पराओं के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। भोजपुरी लोक में कई गीत प्रचलित हैं जिनको अभी तक लिपिबद्ध नहीं किया गया है। भोजपुरी लोक जीवन में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई न कोई संस्कार सम्पन्न होता ही है जिसमें गीत गाये जाते हैं ये गीत सुख-दुःख को प्रकट करते हैं। मानव संवेदना को प्रकट करते हुए ये गीत शांति प्रदान करते हैं जो गाँव के बुजुर्ग या अनुभवी व्यक्ति के द्वारा मुखरित होते हैं। ये गाने लिखित रूप में नहीं मिलते लेकिन बहुतायत में प्रचलित होते हैं।

संस्कार गीत

संस्कार गीतों में सोहर गीत, मुंडन गीत, विवाह गीत, विदाई गीत, मृत्यु गीत आदि हैं। सोहरगीत गीत पुत्र रत्न प्राप्ति के शुभ अवसर पर महिलाओं द्वारा अनुगूँजित होते हैं, इन्हें मांगलिक गीत भी कहते हैं जो खुशी के अवसर में गाये जाते हैं। एक सोहर गीत प्रस्तुत है-

‘केकरा ही जनमें श्री राम, त केकरा कन्हैया जनमें हो

केकरा ही जनमें श्री गणेश तिनु घरे सोहर हो

कौषला जी के जनमें श्री रामत देवकी के कन्हैया जनमें हो

आरे गउरा जी के जनमें गणेश तिनु घरे सोहर हो।’

मुण्डन संस्कार गीत-बालक के जन्म के कुछ दिनों बाद उसका मुण्डन संस्कार किया जाता है, इस अवसर पर गीत गाये जाते हैं। तुलसीदास जी अपने रामचरित मानस में भगवान राम के ‘चूडाकर्म’ का वर्णन किया है। चूडाकर्म कीन्ह गुरु आई ‘मुण्डन संस्कार को संस्कृत भाषा में ‘चूडाकर्म’ कहते हैं।

‘लपरीया ओलारी के मुंडनीय करवा दो,
मुंडन के लिए बरूआ सब कुछ तैयार,
तेरे पापा नहीं आये है मुंडनीया कैसे होगी
पापा लिए मेरे कार भेजवा दो

मम्मी के लिए डोलिया मेरी मम्मी चली आयेगी।’

विवाह एक पवित्र संस्कार है इस अवसर पर अनेक गीत गाये जाते हैं। भारत देश के अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग विवाह गीत गाये जाते हैं। किसी भी जाति, धर्म में लोगों की शादी हो गाने अवश्य गाये जाते हैं-

‘एकत धीया पतरी घुसर सुकवार
कइसे-कइसे जइबू ए बेटी सातो नदी पार
वाये जइहें लोकनी दहिने सेठ भाई
ओइस ओइस जइबो एक अम्मा सातो नदी पार।’

विदाई गीत-शादी के बाद गवना होता है इस अवसर पर लड़की की विदाई होती है अतः विदाई गीत गाये गए जाते हैं।

‘काँच ही आमवा ए पापा तुरी तुहु हो लीहल आरे
रोजो रोजो कहल ए पापा धिअवा बाडी हो जंजाल
कबो नहीं कहले ए पापा भइया बाडे जंजाल।’

मृत्यु संस्कार मानव जीवन का अंतिम संस्कार है। इस अवसर पर मृत व्यक्ति के कर्मों, गुणों को विलाप के धुन में गाते हुए महिलाएँ दुःख व्यक्त करती हैं। पति के स्वर्गवासी हो जाने पर एक स्त्री विलाप करती है-

‘के मीरा नइया के पाल लगइहे ए राम
अब कइसे दिनवा काटवि ए रामा।।’

वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं विभिन्न ऋतुओं में अनेक त्यौहार होते हैं। जिसमें सुन्दर गीत गाये जाते हैं। बारिस के मौसम में अर्थात् सावन माह में कजली गीत गाये जाते हैं। जैसे-

‘बिहवा बसेला केहि ओर होके वनवा में मोर बोले ननदी
चढ़ते अषढवा गरजे बदरवा,
सोचि-सोचि जियरा म उठै ल लहरवा,
कि वनवा म मोर बोले ननदी।।
सावन, भादव के झुकी अधियरियाँ बरसै हो रागना,
बाबुल तोहरे अंगनवा बरसै हो रागना।’

फाल्गुन माह में होली के अवसर पर फागुआ गीत गाये जाते हैं। इस अवसर पर कबीर दास जी कहते हैं-

‘अररर सररर भइया, सुन लेह मोर कबीर’

चैत के माह में चैता गीत गाये जाते हैं। ये सब गीतों के कोई लेखक नहीं होते हैं। जन-मन से निकली हुई बोलियाँ हैं जो भावों को अभिव्यक्त करती हैं। जैसे-

‘चैत के लहर कहर बहुतै बढावात कि
चढ़ती जवनिया में अंगिया लगावा त,
तू तो परदेषवा म कटतरचनी,
बिगड़तनि जब खेसरिया चैत गवतनि।’

पर्व –त्यौहार

हमारी संस्कृति के सभी पर्व-त्यौहार धर्म से जुड़े हुए हैं। धर्म में उपवास रखने की परम्परा है। कई त्यौहारों को उपवास के साथ मनाने की परम्परा है। महिलाएँ उपवास रखती हैं पूजा-पाठ करती हैं और गाना भी गाती हैं। नागपंचमी के अवसर पर गीत गाये जाते हैं। धान की रोपाई के समय गीत गाये जाते हैं-

“तोर धनवा मोर धानवा एके में मिलायो रे
तोर माई हमार बाबू एकेये सुतायो रे.....।

गंगा मइया की पवित्रता उसकी महत्ता को गीत के माध्यम से अनुगूजित किया जाता है-

“मोहे दर सन दिही ए गंगा मइया, सुबह दरसन दिहीं
राउर दरसन से पाप कटित हे, दर सन दिहीं|.....

शीतला माई

शीतला माई की महत्ता का वर्णन गीतों के माध्यम से भोजपुरिया बड़ी लगन और श्रद्धा के साथ करते हैं। गीतों के माध्यम से शीतला माई को प्रसन्न करते हैं कि हम सब की मनोकामना पूर्ण हो हम सब सुखी रहें। शीतला माई के विभिन्न रूपों का वर्णन गीतों के माध्यम से लोग करते हैं जो कहीं लिखित नहीं हैं। जन मानस के मन मंदिर से प्रस्फुटित होते हैं-

“बूढ़ी भरलू आहो ए मइया पाकलि राउर केसिया.....।”¹

छठ पर्व के अवसर पर गाये जाने वाले गीत व्रत से सम्बंधित गीत होते हैं। सभी महिलाएँ भाव विभोर होकर छठी मइया के गीत गाती हैं-

“कातिक मासे छठी बरत लागेला

मैं खेली बाचा के माई ए छठी मइया...।”²

दीवाली के पहले किये जाने वाले घरौधे के निर्माण के समय लोकगीत गाये जाते हैं-

“मोरो भइया बसेलें मोरंग मनेर से

लेते अइह हो भइया कुलिया-चुकियाला.....।”³

कोहबर लेखन

भोजपुर क्षेत्र में कोहबर बनाने की परम्परा है, शादी के फेरे पूरा होने के बाद वर-वधू जब गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं उस समय दीवार पर विशेष आकृति बनाकर पूजा की जाती है। यह आकृति वधू की भाभी या बहन के द्वारा बनाया जाता है। कभी-कभी यह वधू के द्वारा भी बनाया जाता है जिससे उसकी कलात्मकता और सृजनात्मकता का पता चलता है। इसे बनाते समय एक गीत गाया जाता है-

“लिखिना भाभी पडोसिन, जहाँ उतरे नवाब कोबहर

ताहां ले बइठेले कवन दूल्हा, बताव आपन नाम हो।”⁴

पिडिया लेखन के समय विशेष प्रकार का गीत गाया जाता है। बच्चों के कल्याण हेतु यह पिडिया रखा जाता है। इसके पूजन के समय निम्न प्रकार का गीत प्रस्तुत है-

“सदाहद पिडिया दहल जाली

दहल जाली दाहाइल जाली

सदाहद पिडिया.....।”⁵

गाँव में बच्चों के खेलों में गीत मिलते हैं जिसके माध्यम से मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। बच्चों में प्रेम, सहयोग, सहानुभूति झलकती है। ग्रामीण खेलों में वास्तविकता होती है-

“दस-बीस-तीस-चालीस-पचास-साठ

सत्तर-अस्सी-नब्बे-सौ

सौ में लागल ताला, चोर निकल के भागा।”⁶

इस प्रकार देखते हैं कि यह क्षेत्र लोक गीतों का खजाना है जो संस्कृति को व्यक्त करते हैं ये गीत भारत में ही नहीं अपितु विश्व में अपनी लोक प्रियता बनाए हुए हैं।

लोक वार्ता

लोक वार्ता शास्त्र का एक महत्वपूर्ण विषय है लोक कथाएं। भोजपुरी में लोक कथा को कथा या कहानी कहते हैं। परम्परा में व्याप्त एवं लोक प्रचलित वे कथाएं होती हैं जिनमें आदिकालीन सामाजिक व्यवस्था से लेकर मध्यकालीन एवं वर्तमान युगीन जातिगत एवं सामाजिक अभिव्यक्तियाँ तथा श्रद्धा, आस्था संचित होती है। संपूर्ण मानव की आसक्ति कौतूहल, लालसा को पूरित करना है। शिष्ट समाज में कहानियों की भाँति मानव जीवन की व्याख्या करना और चरित्र का निर्माण करना नहीं है। ये छोटी कहानियाँ होती हैं जो बच्चों, किशोरों का मनोरंजन करने एवं बुजुर्गों की जिज्ञासाओं की शांति हेतु अथवा त्यौहार पर्व एवं उपासना के समय धार्मिक प्रबलता हेतु सुनाई जाती हैं। परियों की कथाएं और राजा-रानी की कहानियाँ सुनकर बच्चों को नींद आती थी। किशोर, राजकुमार और राजकुमारी की प्रेम-कथा का आनंदानुभूति करते हैं एवं प्रौढ़ व्यक्ति प्राचीन की झलक देखते हैं जिसमें वर्तमान भविष्य की संस्कृति को सुन्दर बनाते हैं। कभी-कभी अशिक्षित ग्रामीण जनता इन कथाओं को वास्तविक घटना मान बैठते हैं वहीं पर शिक्षित, शहरी लोग ऐसी कथाओं को केवल मनोरंजन हेतु पढ़ते एवं सुनते हैं जिससे उनको आनन्द की प्रतीति होती है।

लोक कथा

कथाओं के सुनते समय उनमें यह विचार नहीं आता कि वे बेकार व असम्भव घटनाओं से परिपूर्ण है और ऐतिहासिक एवं तर्कपूर्ण नहीं है। अतएव लोक कथाओं का महत्व प्राचीन काल की भाँति आज भी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है, भोजपुरी क्षेत्र लोक कथाओं से समृद्ध है जो मनुष्य से लेकर देवी-देवता, पशु-पक्षी, भूत-प्रेत, परम्पराओं, सामाजिक, व्यवस्था, वस्तुओं आदि में मिलते हैं। इन सबके माध्यम से मनुष्य जीवन पर प्रकाश डालने की कोशिश भोजपुरी लोक में मिलती है। लोक कथाओं की अनेक विशेषताएँ हैं प्रेम की प्रधानता, शालीनता की प्रधानता, स्वाभाविकता, शुभाकांक्षा का समावेश, लौकिकता का अभाव, कौतूहल पूर्णता की प्रधानता, सरल, बोधगम्य भाषा एवं प्रवाहमयता आदि। इन

लोक कथाओं की शैली की तुलना वैदिक व्याख्यानों से करने पर कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वेदों में भी पुरुखा-उर्वशी, विश्वामित्र, यम-यमी और अनेक नदियों का वर्णन मिलता है जिसके व्याख्यान को हम आधुनिक कथाओं के रूप में ले सकते हैं। जिउतिय व्रत कथा एक लोकप्रिय कथा है जो संतान सुख की प्राप्ति हेतु सुनी जाती है।

लोक गाथा

हिंदी साहित्य में 'गाथा' शब्द अत्यंत पुरातन है। गाथा और गीत दोनों में गेयता का गुण होता है। 'गाथा सतसई' एक संस्कृतनिष्ठ प्राचीन विधा की रचना है। कथा साहित्य और आख्यायिका जिस प्रकार संस्कृत की रचनाएँ हैं उसी प्रकार लोककथा और लोकगाथा का स्थान लौकिक साहित्य में लिया जाता है। कथा काल्पनिक होती है जबकि आख्यायिका और गाथा दोनों सत्य घटना आधारित परम्पराएँ हैं। इस संदर्भ में श्रीधर मिश्र का विचार है कि "भोजपुरी लोकगाथाओं में अमानव तत्व अधिकांश रूप में सत्य एवं आदर्श का ही पक्ष होते हैं। वे शेक्सपीयर के अमानव तत्व नहीं हैं जो नायक को दुविधा जनक परिस्थिति में डाल देते हैं। भोजपुरी लोक गाथाओं में अमानव तत्व सशरीर उपस्थित होकर नायक के आदर्श की रक्षा करते हैं।"⁷

लोक गाथायें अनेक प्रकार की होती हैं, इनमें क्षेत्रीयता पायी जाती है। हर क्षेत्र की अपनी-अपनी लोक गाथाएँ होती हैं। इनका विभाजन दो दृष्टि से किया जा सकता है पहला विषय-वस्तु के अनुसार एवं दूसरा आकार के आधार पर। आकार की दृष्टि से गाथाएँ दो प्रकार की होती हैं विशाल एवं लघु गाथाएँ। विशाल गाथाओं का रूप निबंधात्मक एवं काव्यात्मक रूप में उपलब्ध होती है वहीं पर लघु गाथाएँ छोटी होती हैं। उदाहरण हेतु कुसुम देवी एवं भगवती देवी की 'गाथाएँ' लघु गाथाएँ हैं तथा वृहद गाथाओं में ढोला-मारू, हीर-राँझा, आल्हा-ऊदल की लम्बी गाथाएँ अत्यंत लोक प्रिय हैं। गाथाएँ अनेक प्रकार की होती हैं श्रृंगार प्रधान गाथाएँ, वीरता प्रधान गाथाएँ, रोमांच प्रधान गाथाएँ।

भोजपुरी लोक गाथाओं में राजस्थान प्रदेश की भाँति वीरता पूर्ण गाथाओं की अधिकता रही है। वीरों की सम्पूर्ण जानकारी को गाथाओं के माध्यम से देखा जा सकता है। भोजपुरी में लोग गाथाओं की अधिकता है। किसी के कथानक छोटे हैं किसी के बड़े। विषय वस्तु की दृष्टि से कथानक तीन प्रकार के बताये जाते हैं। कुछ महत्वपूर्ण गाथाएँ कुसुमा देवी, लचिया, भगवती देवी, आल्हा, लोरकी, सोरठी, बिहुला, विषधरी, गोपीचन्द, विजयमल, राजा भरथरी, ढोलन, चनैनी, बंजारा, नथकवा आदि हैं। उपर्युक्त गाथाओं में आल्हा, सोरठी, लोरिकायन, विजयमल अधिक लोकप्रिय हैं। 'आल्हा' को सबसे अधिक महत्व प्राप्त है इसमें आल्हा और ऊदल नामक दो भाइयों की वीरता की गाथा का वर्णन है।

‘लागल कचहरी जब आल्हा के,
आरे रामा लागल कचहरी जब आल्हा को बंगला बड़-बड़ बबुआन,
लागन कचहरी उज्जैन के दरबार..... ।
नाग नागपुर के, नगफैली बाँध कमर तलवार।
बड़ल बाड़े काकन दिल्ली के लोह तनिया तीन हजार।
झड़ल उझनिया, गुजहनिया है, बाबू बड़ल गदहियावाल।’

लोक नाट्य

भोजपुरी लोक संस्कृति की कथावस्तु को लेकर अनेक नाटक लिखे गये। नाटक में मनोरंजन और सामाजिक शिक्षा की सामूहिक अभिव्यक्ति होती है। नाटक एक गद्यात्मक विधा है, हिन्दी साहित्य में नाटकों का आविर्भाव भारतेंदु युग से माना जाता है। भोजपुरी लोक नाट्य में 'ठाकुर भिखारी' का नाम प्रसिद्ध है इन्होंने अनेक नाटकों की रचना की जो भोजपुरी लोक संस्कृति की जीवन्तता का उदाहरण है। इन नाटकों के लेखक व्यक्ति विशेष नहीं होते हैं। सम-सामयिक सामाजिक दशाओं की मौखिक अभिव्यक्ति करते हैं। ये नाटक क्षेत्र विशेष की संस्कृति को जीवित रखते हैं। नाटक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, पौराणिक एवं श्रृंगार प्रधान कथाओं पर आधारित होते हैं। समाज में प्रचलित कुप्रथाओं एवं सामाजिक कमियों को प्रभावशाली ढंग से लोक के सम्मुख प्रस्तुत करने का कार्य ये नाटक करते हैं। लोकप्रियता और भाषा की सरलता इन नाटकों की विशेषता है।

ठाकुर भिखारी ने अनेक नाटकों की रचना की है। विदेशिया 'ठाकुर का सर्वाधिक लोक प्रसिद्ध नाटक है। इसकी कथावस्तु में एक विरहिणी स्त्री की व्यथा का वर्णन है। उनके नाटकों का विषय पूर्वांचल एवं बिहार क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक स्थिति रही है। इनके अनेक नाटक मिलते हैं जैसे-भाई विरोध, बेटी वियोग, विधवा-विलाप, कल्युग प्रेम, गंगा-स्नान, पुत्र-वध आदि। इनके नाटक सामाजिक बुराईयों, कुरीतियों, आर्थिक समस्याओं को लेकर लिखे गये हैं। 'कल्युग प्रेम' नामक नाटक में नशा, करने वाले पति, प्रेमी का वर्णन है, 'विधवा-विलाप' में जमींदार के हाथ में इज्जत गँवाने वाली स्त्री का वर्णन है। 'बेटी-वियोग' में अखजो नामक नायिका एक वृद्ध बीमार किसान के हाथ बिक जाती है फिर भी वह अपने पति की सेवा करती है। भिखारी अपने 'गंगा स्नान' नाटक में सास के प्रति पुत्र-बधू के कर्कश व्यवहार को दिखाये हैं। उनके नाटकों में स्त्रियों के कई रूपों का वर्णन मिलता है। स्त्रियों के त्रिया चरित्र को कथावस्तु बनाकर लोगों के समक्ष मनोरंजन एवं समाज सुधार की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। अपने नाटकों में नारी के उस रूप का वर्णन किया है जिसमें एक पत्नी जब ससुराल आती है तो वह अपने पति को अपने वश में करके संयुक्त परिवार से नाता तोड़ लेती है।

भिखारी ने समाज में प्रचलित वेश्या प्रवृत्ति को नाटकों में सावधानी के साथ दर्शाया है इस विषय में 'विदेशिया' नाटक प्रसिद्ध है। "विदेशिया बिहार का संगीत, नृत्य और नाटक मिश्रित सर्वाधिक लोकप्रिय मनोरंजन है। मूलतः इसके प्रवर्तक 'गुदरराय' थे परंतु इसे अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का सारा श्रेय ठाकुर भिरवारी को है।" 8 इस प्रकार इनके नाटकों में समाज में प्रचलित बुराई, प्रेम विवाह, नारी स्वभाव आदि का बड़ी यथार्थता के साथ प्रस्तुतीकरण मिलता है। इनके नाटक भोजपुरी लोक संस्कृति की वास्तविकता को प्रस्तुत करते हैं इनके नाटकों की यथार्थता में दलित-विमर्श भी मिलता है। भोजपुरी लोक संस्कृति के दूसरे नाटकार के रूप में पं. राहुल सांकृत्यायन का नाम आता है। इनका प्रसिद्ध नाटक 'मेहरारुन की दुर्दशा' प्रसिद्ध है।

जट-जाटिन नाटक

कुँवारी लड़कियों के द्वारा अभिनीत है। श्रृंगार प्रधान विषय वस्तु को लेकर नाट्य मंचन किया जाता है। यह लोक नाट्य जाट जाति के पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन को अभिव्यक्त करता है। डोमकच लघु नाटिका का संबंध सामाजिक परम्पराओं से है। शादी के समय जब वर पक्ष की बारात विदा होकर चली जाती है तो घर में महिलाओं द्वारा नाटक खेला जाता है जिसे जलुआ भी कहते हैं। इस संदर्भ में श्रीधर मिश्र का कथन है "इस हास्यपूर्ण नाटक के लिए महिलाएँ चारपाई के पावे का लड़का बनाती हैं। आटा आदि से संपूर्ण मूर्ति बनाती हैं इसे जलुआ कहते हैं। इस नाटक में इसी बालक रूपी जलुआ के जन्म से विवाह तक की लीला होती है। इस प्रकार इसका नाम जलुआ पड़ गया। औरतों का मानना है कि जलुआ सुंदर उतर जाए तो इसका अर्थ है कि कन्या सुंदर है।" 9

उपसंहार

इस क्षेत्र के लोग कला प्रेमी होते हैं। नाचना, गाना, मेला, दंगल-कुश्ती आदि मनोरंजन के लिए प्रयोग किये जाते हैं। मेलों का अधिक प्रचलन है जिसमें स्त्रियाँ एवं पुरुष सभी बड़े ही उत्साह के साथ आनंदित होते हैं। भजन मंडली बनाने का प्रचलन है जो सभी जगह घूम-घूम कर भजन गाते हैं। कुछ लोग आल्हा-खण्ड, लोरकी और रामायण का गायन करते हैं। शादी ब्याह में गाना गाने और नाचने का प्रचलन है जिसे देखने के लिए गाँव के लोग इकट्ठा होते हैं यहाँ का विदेशिया नृत्य विशेष लोक प्रिय है। नगाड़े के साथ अहीर जाति के लोग 'फर्री' नामक नृत्य करते हैं जो वर्तमान के डिस्को नृत्य की तरह होता है। कजरी के पर्व में स्त्रियाँ चाचर नृत्य करती हैं। लड़कों के शादी में बारात जब लड़की के घर को प्रस्थान कर जाती है, उस रात को महिलाएँ जलुआ करती हैं। मांगलिक कार्यों में स्त्रियाँ सामूहिक गान करती हैं।

References (सन्दर्भ ग्रन्थ) :

- [1] भास्कर, भुवनेश्वर भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ. नई दिल्ली : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ स. 46.
- [2] भास्कर, भुवनेश्वर भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ. नई दिल्ली : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ स. 56.
- [3] भास्कर, भुवनेश्वर भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ. नई दिल्ली : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ स. 58.
- [4] भास्कर, भुवनेश्वर भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ. नई दिल्ली : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ स. 157.
- [5] भास्कर, भुवनेश्वर भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ. नई दिल्ली : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ स. 162.
- [6] भास्कर, भुवनेश्वर भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ. नई दिल्ली : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2007 पृष्ठ स. 174.
- [7] मिश्र श्रीधर . भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन. हिन्दुस्तानी अकेडेमी इलाहाबाद, पृष्ठ स. 116.
- [8] महेंद्र भानावत लोक नाट्य परम्परा और प्रवृत्तियाँ. जयपुर : बाफना प्रकाशन 1971-72. पृष्ठ स. 112.
- [9] मिश्र श्रीधर . भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन. हिन्दुस्तानी अकेडेमी इलाहाबाद, पृष्ठ स. 154.
- [10] भोजपुरी लोक संस्कृति का सामान्य अध्ययन, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय I
- [11] संस्कृति के चार अध्याय- रामधारी सिंह 'दिनकर' I
- [12] भोजपुरी लोकसाहित्य - कृष्णदेव उपाध्याय 2022 . I
- [13] लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विद्या चौहान, प्रगति प्रकाशन . 1972
- [14] RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.02 | February 2022 | pp. 55-58.
- [15] भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन – श्रीधर मिश्र I
- [16] चन्दन चौक- भोजपुरी लोकगीत – श्री नमदिश्वर चतुर्वेदी I
- [17] भोजपुरी लोक गीतों के विविध रूप – कृष्ण देव उपाध्याय I

Cite this Article:

डॉ. वर्षा रानी. (2026). भोजपुरी लोक संस्कृति के सन्दर्भ में लोक सृजन का अध्ययन. *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST)*, 4(7), 29–33.

Journal URL: <https://ijmrast.com/> DOI: <https://doi.org/10.59828/ijmrast.v4i7.299>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

© The Author(s) 2026. IJMRAST Published by Surya Multidisciplinary Publication.

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.